भारत के अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव में 31 देशों की सहभागिता

निमिष कपूर एवं उमाशंकर मिश्रा

विश्व के 60 देशों के प्राप्त 634 फिल्मों से चयनित 31 देशों की 210 फिल्मों के प्रदर्शन के साथ ही कई देशों के सुविख्यात विज्ञान फिल्म-निर्माताओं की उपस्थिति में भारत के छठे अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव का आयोजन वर्चुअल रूप में 22 से 25 दिसम्बर 2020 के दौरान किया गया।

'आत्मनिर्भर भारत एवं विश्व कल्याण के लिए विज्ञान' विषय पर आधारित भारत का विशालतम विज्ञान महोत्सव- भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल-आई.आई.एस.एफ.) के एक प्रमुख कार्यक्रम के रूप में आयोजित भारत का अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव (इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया) इस वर्ष कई मायनों में ऐतिहासिक रहा। फिल्मोत्सव में न केवल भारत और विश्व के देशों के वैज्ञानिक विकास को दर्शाती फिल्मों की प्रस्तुति हुई, बल्कि सदी के महानायक श्री अमिताभ बच्चन और ख्यातिलब्ध फिल्मकारों श्री शेखर कपूर और श्री माइक पांडेय को भी सुनने का मौका मिला। फिल्मोत्सव में भारत सहित जर्मनी, अमरीका, रूस, कनाडा, इटली, यूके, फ्रांस, हंगरी, ब्राज़ील, ओमान, बोलीविया, पुर्तगाल, स्पेन, ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया, ईरान सहित 31 देशों की विज्ञान फिल्मों को शामिल किया गया।

22 दिसम्बर 2020 को भारत के अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव का उद्घाटन करते हुए भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. हर्ष वर्धन ने कहा कि "भारत प्रतिभाशाली फिल्मकारों और विज्ञान के प्रति रुचि रखने वाले उत्साही लोगों का घर है। अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव के जरिये हम ऐसे सभी लोगों को विज्ञान लोकप्रियकरण और वैज्ञानिक चेतना के प्रसार के कार्य से जोड़ना चाहते हैं।" उन्होंने कहा कि भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आई.आई.एस.एफ.) की सार्थकता तभी होगी, जब हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को समझा सकें कि वे इस आयोजन में आभासी रूप से शामिल हो सकते हैं और विज्ञान को करीब से समझ सकते हैं। डॉ. हर्ष वर्धन ने कहा है कि अगर हम ऐसा कर पाए तो यह आयोजन अपने आप में ऐतिहासिक होगा।

> *भारत प्रतिभाशाली फिल्मकारों और विज्ञान के प्रति रुचि रखने वाले उत्साही लोगों का घर है। अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव के जरिये हम ऐसे सभी लोगों को विज्ञान लोकप्रियकरण और वैज्ञानिक चेतना के प्रसार के कार्य से जोड़ना चाहते हैं।*
>
> **डॉ. हर्ष वर्धन**

इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया का समन्वयन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की स्वायत्त संस्था विज्ञान प्रसार द्वारा किया गया।

फिल्मोत्सव के उद्घाटन सत्र में विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री जयंत सहस्रबुद्धे ने कहा कि "विज्ञान को आम लोगों तक ले जाने की एक बहुत बड़ी परिकल्पना की गई थी, जो विज्ञान फिल्मों के माध्यम से आज साकार हो रही है। विज्ञान की जानकारी तो लोगों तक पहुँचाई जा सकती है, पर उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करना फिल्मों के जरिये बेहतर ढंग से संभव हो सकता है।"

विज्ञान प्रसार के निदेशक डॉ. नकुल पाराशर ने बताया कि "इस फिल्म फेस्टिवल का लगातार विस्तार हो रहा है। इस बार हमें 60 देशों की 634 विज्ञान फिल्म प्रविष्टियां मिली हैं, जो स्वयं में एक रिकॉर्ड है। इन फिल्मों में विज्ञान और कोविड-19 से जुड़े वृत्तचित्र, लघु फिल्में और एनिमेशन वीडियो शामिल हैं।" इस अवसर पर सुविख्यात फिल्मकार और इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया की निर्णायक समिति के अध्यक्ष

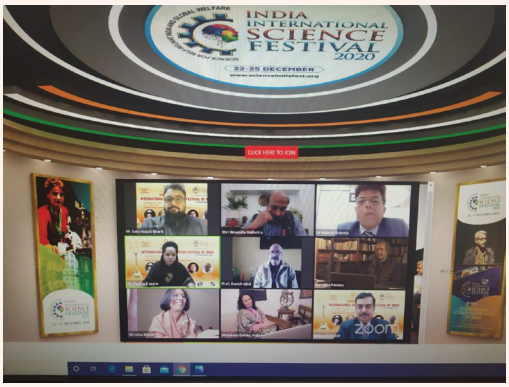

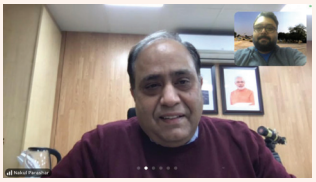

फिल्म पुरस्कार समारोह में फिल्मकारों से मुखातिब श्री अमिताभ बच्चन, श्री शेखर कपूर एवं श्री माइक पांडेय

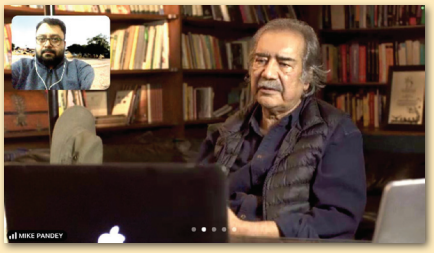

सदी के महानायक श्री अमिताभ बच्चन ने रिकार्डेड सन्देश के माध्यम से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा फिल्मों, टेलीविजन कार्यक्रमों और अन्य संचार गतिविधियों के माध्यम से विज्ञान को आम लोगों तक पहुँचाने जाने के प्रयासों की सराहना की। 25 दिसंबर 2020 के दौरान भारत के अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव के फिल्म पुरस्कार समारोह को संबोधित करते हुए अमिताभ बच्चन ने कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में एक अहम् भूमिका रही है। उन्होंने आम लोगों तक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधारित ज्ञान एवं सूचनाओं को पहुँचाने की आवश्यकता पर भी बल दिया। इस संदर्भ में, उन्होंने भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव के आयोजन को सराहनीय बताया।

फिल्म पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि, फिल्म ऐंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के अध्यक्ष और मशहूर फिल्मकार श्री शेखर कपूर ने कहा है कि वैज्ञानिकों एवं फिल्मकारों को साथ मिलकर काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक खोज के लिए जिज्ञासा और साहस की भावना की आवश्यकता होती है, और अच्छे फिल्मकार विज्ञान व वैज्ञानिकों पर प्रेरक फिल्मों का निर्माण करके युवा पीढ़ी के बीच इस गुणवत्ता को विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

पर्यावरणविद एवं जाने-माने फिल्मकार श्री माइक पांडेय ने विज्ञान से संबंधित विषयों पर वृत्तचित्र और अन्य फिल्मों को एक सशक्त माध्यम बताया और कहा कि इसकी क्षमता बढ़ाने और मजबूती प्रदान करने के लिए यथेष्ट बजट तथा अन्य सहायता उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

श्री माइक पांडेय; फिल्म्स डिवीज़न के पूर्व महानिदेशक डॉ. मुकेश शर्मा; दूरदर्शन की पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक श्रीमती ऊषा भसीन, और विशेष रूप से आमंत्रित लंदन की पब्लिक हेल्थ फिल्म सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. उई होआंग ने विज्ञान फिल्मों से जुड़े विविध आयामों को रेखांकित किया।

विज्ञान फिल्मकारों द्वारा समूह परिचर्चा

इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया में विज्ञान फिल्मों से जुड़े आयामों पर चर्चा के लिए देश-दुनिया के विज्ञान फिल्मकारों को आमंत्रित किया गया जिन्होंने समूह परिचर्चाओं और मास्टर क्लास के माध्यम विज्ञान फिल्मों के निर्माण से जुड़ी बारीकियों पर चर्चा की। एक विशेष परिचर्चा का विषय ''फिल्मों के माध्यम से विज्ञान की सार्वजनिक समझ को बढ़ावा देने के लिए भारतीय-अंतर्राष्ट्रीय प्रयास-चुनौतियाँ और अवसर" पर केंद्रित था। परिचर्चा की शुरुआत करते हुए विज्ञान प्रसार के निदेशक डॉ. नकुल पाराशर ने साइंस फिल्म फेस्टिवल के आरंभ और इसकी विकास-यात्रा को रेखांकित किया।

लंदन की संस्था पब्लिक आर्ट्स एंड हेल्थ और पब्लिक फिल्म्स सोसायटी से जुड़े फिल्मकार कार्तिक शर्मा ने विज्ञान आधारित फिल्मों के निर्माण के बारे में अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि ''मैं मानसिक स्वास्थ्य पर केंद्रित एक फिल्म बना रहा हूँ। इस फिल्म के निर्माण में मुझे कोई समस्या नहीं है। लेकिन, फिल्म निर्माण के दौरान बहुत-से लोगों के साथ तालमेल बिठाना पड़ता है, जो अपने आप में चुनौतीपूर्ण है।''

इजराइल की फिल्मकार, लेखक एवं ई-लर्निंग विशेषज्ञ रामा मैरिनोव-कोहन ने अपने पिता के कार्य और उनके जीवन पर केंद्रित एक डॉक्यूमेंट्री बनायी है, जिसे इजराइल के स्कूलों में प्रदर्शित किया जाता है। उन्होंने बताया कि इस डॉक्यूमेंट्री को देखकर स्कूली छात्र कहते हैं

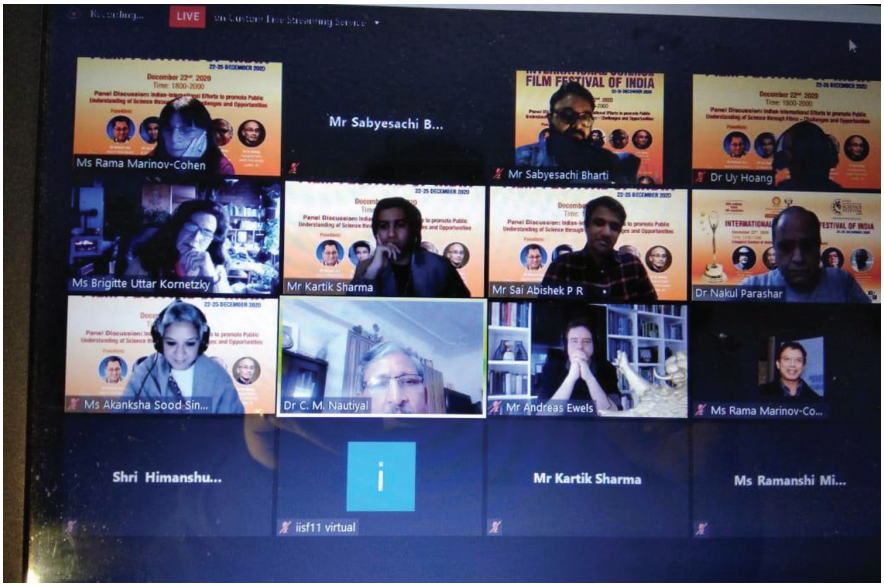

कि वे भी बड़े होकर वैज्ञानिक बनना चाहते हैं। कोहन ने कहा कि ''वास्तव में, विज्ञान फिल्में छात्रों को एक विस्तृत दृष्टिकोण देती हैं।

लंदन की पब्लिक हेल्थ फिल्म सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. उई होआंग ने कहा कि ''यदि सार्वजनिक स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएं हल हो जाएं, तो लोगों को दूसरी बहुत-सी समस्याओं से उबरने में भी मदद मिल सकती है। इस तथ्य को लोगों को बताना और उन्हें इसके बारे में समझाना जरूरी है। अब जबकि दुनिया महामारी के संकट से जूझ रही है, तो यह पहल और भी महत्वपूर्ण हो गई है। इस काम में विज्ञान फिल्मकारों की भूमिक बेहद अहम् है, जो आम लोगों को विज्ञान से जोड़ सकते हैं।''

राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रपति से सम्मानित नोएडा की वन्यजीव एवं विज्ञान फिल्मकार आकांक्षा सूद ने कहा कि विज्ञान संचार आम जनमानस में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और दैनिक जीवन की समस्याओं को उसी दृष्टि से हल करने के लिए प्रेरित करने में कारगर हो सकता है।

पर्यावरणीय और प्राकृतिक विषयों पर केंद्रित फिल्मों के जर्मनी के विशेषज्ञ एंड्रयूज़ ने कहा कि प्रकृति पर केंद्रित फिल्में लोगों को इसके प्रति संवेदनशील बनाने में महत्वपूर्ण हो सकती हैं।

डिस्कवरी चैनल, दक्षिण एशिया के ओरिजिनल कंटेंट, फैक्चुअल एंड लाइफस्टाइल एंटरटेनमेंट निदेशक साई अभिषेक पी.आर. ने डॉक्यूमेंट्री के लिए विविध विषयों और उससे संबंधित सामग्री एकत्रित करने के बारे में विस्तार से चर्चा की। वह लोकप्रिय टीवी कार्यक्रम 'मैन वर्सेज वाइल्ड' से भी जुड़े रहे हैं।

परिचर्चा में शामिल जर्मन-स्विस फिल्ममेकर ब्रिगेट कोरनेत्ज्की ने कहा कि ''दक्षिण-एशिया में बहुत-से लोगों के पास हाथी हैं। वे हाथियों को चेन से बांधकर रखते हैं, जिससे हाथियों के पैरों में घाव बन जाते हैं।'' उन्होंने जैव विविधता और वन्यजीवों के संरक्षण पर केंद्रित फिल्मों के महत्व को रेखांकित किया।

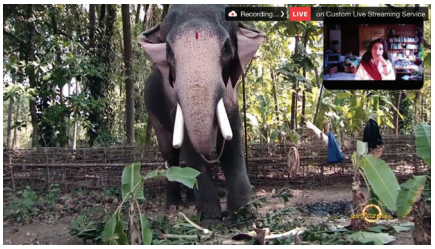

जर्मन मीडिया संस्थान डॉयचे वेले के हिंदी कार्यक्रमों के प्रमुख महेश झा ने कहा कि शब्दों की तुलना में तस्वीरों का प्रभाव हमेशा अधिक होता है और वे लोगों को जल्दी आकर्षित करती हैं।

विज्ञान फिल्म निर्माण पर ऑनलाइन मास्टर क्लास

नीदरलैंड के फिल्म निर्माता ए.जी.ए. वैन डे लार ने 'ट्रेंड्स इन साइंस फिल्म मेकिंग' विषय पर आयोजित मास्टर क्लास को संबोधित करते हुए कहा- ''भारत एक ऐसा देश है, जहाँ बहुत-से किफायती और जमीनी नवाचार हो रहे हैं। इनकी संरचना मजबूत है, और वे स्थानीय लोगों की जरूरतों को पूरा करने के अनुकूल हैं। ऐसे नवाचार बुनियादी विज्ञान फिल्में बनाने के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं। भारत में मुझे कुछ ऐसे की नवाचारों पर काम करने का मौका मिला, जो नई जानकारियों से समृद्ध हैं।'' वैन डे लार ने कहा कि ''भारत स्मार्ट और उद्यमशील लोगों का देश है। अपने उद्यमीय नवाचारों के जरिये जीवन-यापन के तरीके ढूंढ लेना, भारत के लोगों की एक अहम् विशेषता है।'' उनका मानना था कि लोगों की नवाचारी प्रवृत्ति पर केंद्रित फिल्मों के विषय समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में मददगार हो सकते हैं।

मास्टर क्लास - 'विज्ञान फिल्म निर्माण और स्टोरी-टेलिंग' को मुंबई की वृत्तचित्र निर्मात्री आरती श्रीवास्तव ने संबोधित किया। उन्होंने पर्यावरण एवं वन्यजीव फिल्म निर्माण और कहानी बयां करने व उसके विभिन्न स्वरूपों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा- ''प्रामाणिक स्क्रिप्ट तैयार करने के लिए अनुसंधान और डेटा का उपयोग एक महत्वपूर्ण पहलू है, जहाँ विज्ञान फिल्म निर्माताओं को जोर देना चाहिए। शोध पत्र ठोस तथ्य उपलब्ध कराते हैं, जो अंततः अच्छी फिल्मों का आधार बन सकते हैं। इसके लिए कुछ अच्छे स्रोतों की जरूरत होती है, जो स्क्रिप्ट को मजबूत बनाते हैं।''

मास्टर क्लास के दौरान जर्मन-स्विस फिल्मकार ब्रिगेट कोरनेत्ज्की ने कहा कि विज्ञान फिल्म निर्माण में अतिरिक्त मेहनत की जरूरत होती है, और हमें विषयों को तथ्यपरक रूप से प्रस्तुत करना होता है। इसके लिए धैर्य के साथ-साथ जुनून भी जरूरी है। कोरनेत्ज्की स्वयं वन्यजीव

संरक्षण से जुड़ी हैं, और वे समुदाय आधारित संरक्षण गतिविधियों को महत्वपूर्ण मानती हैं। उन्होंने कहा कि अपनी फिल्मों के माध्यम से मेरी कोशिश वैज्ञानिक संदर्भ से आम लोगों को जोड़ने की होती है। ब्रिगेट ने हाथियों पर विशेष रूप से अध्ययन किया है। उन्होंने बताया कि उनकी अगली फिल्म हाथियों और मनुष्य के टकराव एवं उनके सह-अस्तित्व पर केंद्रित है।

मास्टर क्लास शृंखला में फिल्मकार आकांक्षा दामिनी जोशी ने बताया कि फिल्म निर्माण में विषय चयन बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि यदि हम कोई एक विषय चुनते हैं, तो दूसरे बहुत-से विषय छूट जाते हैं। इसीलिए, फिल्म के किसी एक विषय के विभिन्न आयामों को रेखांकित करना महत्वपूर्ण होता है।

एक अन्य मास्टर क्लास के दौरान इंडियन नेशनल साइंस एकेडमी में विज्ञान संचार कार्यक्रमों के सलाहकार डॉ सी.एम. नौटियाल ने साइंस वीडियो निर्माण में कठिन विषयों को फिल्माने से जुड़े चुनौतियों के बारे में विस्तार से बताया। गॉड पार्टिकल का उदाहरण देते हुए उन्होंने विज्ञान वीडियो निर्माण को रेखांकित किया और कहा कि बहुत-सी वैज्ञानिक प्रक्रियाओं में एक लंबा वक्त लगता है, लेकिन उन प्रक्रियाओं को वीडियो में सीमित समय में दर्शाना होता है।

पुरस्कार से सम्मानित फिल्में

इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया 2020 में देश एवं दुनिया की कुल 20 फिल्मों को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिसमें छह विदेशी फिल्में और 14 भारतीय फिल्में शामिल हैं। अंतर्राष्ट्रीय श्रेणी में, 'विश्व कल्याण के लिए विज्ञान' विषय पर केंद्रित फिल्म का सर्वोच्च पुरस्कार जर्मनी के एंड्रयूज एवेल्स द्वारा निर्देशित अंग्रेजी भाषा की फिल्म 'द इंसेक्ट रेस्क्यूअर्स' को मिला है। जबकि, इसी वर्ग में, 'विज्ञान तथा कोविड-19' विषय पर केंद्रित समारोह का सर्वोच्च पुरस्कार ईरान के अश्कान हतामी द्वारा निर्देशित पारसी भाषा की फिल्म 'नाइट नर्स' को मिला है।

तीन फिल्मों को अंतर्राष्ट्रीय श्रेणी में जूरी पुरस्कार प्रदान किए गए हैं, जिसमें यू.के. की

इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया 2020 में देश एवं दुनिया की कुल 20 फिल्मों को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिसमें छह विदेशी फिल्में और 14 भारतीय फिल्में शामिल हैं।

क्रिस्टिना क्यूका द्वारा निर्देशित अंग्रेजी फिल्म 'ए नेचुरल कोड', ऑस्ट्रेलिया के राधेया जेगथेवा द्वारा निर्देशित अंग्रेजी फिल्म 'आइरनी' और ईरान के हसन मुख्तारी द्वारा निर्देशित बिना डायलॉग की फिल्म 'कीप योर स्माइल' शामिल है। इसी वर्ग में, एक विशेष जूरी पुरस्कार इटली के विटोरियो कैरेतोज्जोलो ऐंड क्लास-3ए द्वारा निर्देशित फिल्म इतालवी भाषा की फिल्म 'कैमिकल इंडस्ट्रीज वर्सेज कोविड-19' को मिला है। अंतर्राष्ट्रीय वर्ग में पुरस्कृत सभी फिल्मों को ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

भारतीय फिल्म वर्ग में पुरस्कार दो श्रेणियों के अंतर्गत प्रदान किए गए हैं, जिनमें स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं और कॉलेज/स्कूली छात्रों की फिल्में शामिल हैं। स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं द्वारा निर्मित फिल्मों में अंग्रेजी फिल्म 'द ट्रायल्स ऐंड ट्रिअम्स ऑफ जी.एन. रामचंद्रन', जिसका निर्माण विवेक कन्नडी और निर्देशन राहुल अय्यर द्वारा किया गया है, को 'आत्मनिर्भर भारत' विषय पर समारोह का सर्वोच्च पुरस्कार मिला है। 'कोविड-19 जागरूकता तथा विज्ञान और अन्य स्वास्थ्य आपात स्थितियां' विषय पर बीकन टेलीविजन द्वारा निर्मित और सीमा मुरलीधरा द्वारा निर्देशित हिंदी फिल्म 'राजा, रानी और वायरस' को भी स्वतंत्र फिल्मकारों की श्रेणी में समारोह का सर्वोच्च पुरस्कार दिया गया है। इन दोनों पुरस्कारों के रूप में प्रत्येक को एक लाख रुपये नकद, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

भारतीय नागरिकों की स्वतंत्र फिल्मकारों की श्रेणी में जी.एस. उन्नी कृष्णन नायर द्वारा निर्देशित मलयालम फिल्म 'रिटर्न ऑफ द होली ग्रेन', सीमा मुरलीधरा द्वारा निर्देशित अंग्रेजी फिल्म 'वर्थ देअर सॉल्ट', अंशुल सिन्हा द्वारा निर्देशित अंग्रेजी फिल्म 'ह्यूमन्स वर्सेज कोरोना' और डार्क स्टूडियो द्वारा निर्मित एवं राकेश मोइरंगथम द्वारा निर्देशित संवाद रहित फिल्म 'माई मॉम' को जूरी पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस श्रेणी में, जूरी पुरस्कार के रूप में 25 हजार रुपये नकद, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इसी श्रेणी में तीन विशेष जूरी पुरस्कार भी प्रदान किए गए। विशेष जूरी पुरस्कार प्राप्त फिल्मों में राजकुमार द्वारा निर्देशित तमिल 'इफ एवरीबॉडी लाइक दिस.....!', साजीद नादुथोडी द्वारा निर्देशित 'मैंग्रोव्सः नेचर्स हार्डी फूट सोल्जर्स' और जी.एस. उन्नी कृष्णन द्वारा निर्देशित मलयालम फिल्म 'द चेरुवयल रामन इफेक्ट' शामिल हैं। विशेष जूरी पुरस्कार के रूप में ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

भारतीय नागरिकों की स्कूल/कॉलेजों द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत' विषय पर निर्मित फिल्मों के लिए फेस्टिवल का सर्वोच्च पुरस्कार दो फिल्मों को संयुक्त रूप से दिया गया है, जिसमें आदित्य द्वारा निर्देशित अंग्रेजी फिल्म 'क्रॉकिंग फ्रॉग्स' और राहुल कुमार द्वारा निर्देशित फिल्म 'कैचिंग द सन' शामिल है। इसके अंतर्गत पुरस्कार स्वरूप प्रत्येक विजेता को 37,500 रुपये नकद, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

स्कूली एवं कॉलेज छात्रों के वर्ग में, 'विज्ञान तथा कोविड-19' विषय पर केंद्रित समारोह का सर्वोच्च पुरस्कार नीलू शर्मा द्वारा निर्देशित हिंदी फिल्म 'कैन ब्रेक कैंसर' को मिला है। इस पुरस्कार के रूप में 75,000 रुपये नकद, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इसके अलावा, दो जूरी पुरस्कार संटू कुमार द्वारा निर्देशित हिंदी फिल्म 'मास्क' और मोमिता मजूमदार की अंग्रेजी फिल्म 'कोरोना एट डोरस्टेप' को दिया गया। इसके तहत प्रत्येक विजेता को 35,000 रुपये नकद, ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

- **श्री निमिष कपूर**

प्रधान समन्वयक, अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्मत्सव
वरिष्ठ वैज्ञानिक, विज्ञान प्रसार एवं

- **श्री उमाशंकर मिश्रा**

वरिष्ठ संपादक, इंडिया साइंस वायर, विज्ञान प्रसार
[ई-मेलः nkapoor@vigyan prasar.gov.in]